Lectur No-24.

TOPIC :→

Dr. Surita Kumari
Subject - Philosophy.
B.A part - II
Paper - III (H.)
A.N.D. College Shahpur
patory, Samastipur.

(I) Nyaya Theory,

Ans :→ न्याय दर्शन के अनुसार तीसरा प्रमाण उपमान है। उपमान के लक्षण को स्पष्ट करते हुए न्याय दर्शन में कहा गया है कि 'प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनमुपमानम्' अर्थात् प्रसिद्ध अथवा स्पष्ट धर्मों के मिलाने से जो साध्य का ज्ञान होता है उसे उपमान कहते हैं। इस प्रकार उपमान के नाम और नामों के संबंध का ज्ञान होता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी

ऐसी वस्तु के समान धर्मों के विषय में हमें बताये जिसे हमें कभी नहीं देखा तब वह व्यक्ति उसी वस्तु के समान धर्मों वाली हमारी देखी हुई वस्तु से उसकी तुलना करके कहता है कि वह वस्तु बिल्कुल इस वस्तु के समान है, यथा - हमने कभी (नील गाय)

P.T.O.

निल गाय को नहीं देखा किन्तु 'गाय' को देखा है तब कोई हमें बताये कि नील गाय, गाय के जैसी होती है।

और इस ज्ञान के आधार पर हम जब जंगल में कोई गाय जैसा पशु देखते हैं तो तुरंत कहते हैं कि वह नील गाय है।

तब यह ज्ञान हमें उपमान के द्वारा प्राप्त होगा। इस प्रकार उपमान में यह आवश्यक होता है कि हमें ज्ञातव्य वस्तु की सादृश्यता का किसी परिचित वस्तु के साथ के धर्मों का ज्ञान होना चाहिए।

जिसके आधार पर ही आगे चलकर उन सादृश्यों का प्रत्यक्षीकरण होता है। इस प्रकार किसी ज्ञातव्य वस्तु की पूर्व ज्ञान के आधार गुणों से तुलना करना उपमान कहलाता है।

न्याय दर्शन द्वारा निराकरण

P.T.O.

न्याय दर्शन ने उपमान के विषय में लगाये गए उक्त आक्षेपों का उत्तर देते हुए कहा है कि उपमान के लिए विशेष धर्मों का मिलना आवश्यक है।

क्योंकि उपमान के लक्षण में प्रसिद्ध साधर्म्य से साध्य सिद्ध करने पर बल दिया गया है।

अतः इसमें न तो अत्यधिक धर्मों की समता कहा है, और न एक धर्म की समता कहा है। इसके अतिरिक्त उपमान को प्रत्यक्ष का परिवर्तित रूप इसलिए नहीं माना जा सकता है, क्योंकि प्रत्यक्ष में जो वस्तु इन्द्रिय के सानिध्य में आती है उसी का ज्ञान होता है। इसमें किसी अन्य से तुलना नहीं की जाती। इसी प्रकार अनुमान में प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष का ज्ञान किया जाता है।

इसमें इन दोनों के साध्य व्याप्ति की स्थापना आवश्यक होती है किन्तु उपमान में न तो प्रत्यक्ष के द्वारा अप्रत्यक्ष का ही ज्ञान होता है। etc.

END

Scanned with CamScanner